International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

समकालीन हिंदी स्त्री कविता में स्त्री विमर्श

डॉ. संतोष वसंत कोळेकर
कोल्हापुर
DOI- 10.5281/zenodo.14228175

सारांश:

हिंदी साहित्य का समकालीन दौर अस्मितामूलक और मुक्तिकामी विमर्शों का है | वर्षों से जो समुदाय या वर्ग समाज और साहित्य की मुख्यधारा से हाशिए पर धकेले गए उन सभी ने अपनी जगह तलाशने का कार्यारंभ किया | स्त्री, दलित, थर्ड जेंडर, आदिवासी, वृद्ध विमर्श आज साहित्य के ही नहीं शोध के केंद्र में भी है | विमर्श शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है – किसी विषय पर सोचना – समझना, विचार करना | इस दृष्टि से देखा जाए तो 'स्त्री विमर्श' स्त्रियों से संबंधित सभी मुद्दों को सोचने – समझने और विचार करनेवाला चिंतन है, आंदोलन है | नवें दशक में आकर स्त्री विमर्श विद्रोहात्मक रूप धारण कर गया और इक्कीसवीं शताब्दी में तो स्त्री विमर्श साहित्य, संगोष्ठियों, शोध के केंद्र में भी छा गया है | बकौल अनामिका "स्त्री विमर्श करुणा – संबलित न्याय दृष्टि से इतिहास, दर्शन और नैतिक भूगोल की नई व्याख्या है, स्त्री – लेंस से युद्ध, आर्थिक वितरण और सामाजिक न्याय की विश्लेषण – पद्धति" !१

प्रस्तावना:

'मैं' और 'मेरा' को स्त्री लेखन के बीजाक्षर माननेवाली अनामिका जी समकालीन स्त्री विमर्श की मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं | अपनी पैनी दृष्टि , गहन चिंतन – मनन से इन्होंने साहित्य के शिल्प और कथ्य को भी बदला है | वर्तमान हिंदी साहित्य भूमंडलीकरण, नवउदारवाद, सांप्रदायिकता और मानवीय मूल्यों से च्युत होते समाज का जीवंत दस्तावेज बनता जा रहा है | अनामिका का साहित्य भी इससे अछूता नहीं है | इनके स्त्रीवाद का वैशिष्ट्य ही यह है कि उसमें केवल स्त्रियाँ नहीं अपितु समूचे हाशियाकृत समाज का चित्र सन्निहित है | वृद्ध, थर्ड जेंडर, दलित, बच्चे, युवावर्ग और हमकालीन समय और समाज की तमाम समस्याएँ और विसंगतियाँ अनामिका के साहित्य के केंद्र में है | अनामिका की स्त्री दृष्टि में संतुलन का विशिष्ट महत्व है | किसी भी प्रकार का अतिवाद उन्हें मान्य नहीं है और यही कारण है कि उनके समूचे साहित्य में स्त्री और पुरुष एक – दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक होते हैं | एक सबसे उल्लेखनीय बात यह कि वें स्त्री विमर्श को संवादधर्मिता से लैस करती हैं और यही कारण है कि उनकी कविताओं में प्रश्नों की भरमार है |

अनामिका की कविता के केंद्र में भले स्त्री हो लेकिन उसके परिवेश की समूची क्रिया – प्रतिक्रिया, जटिलता और आवरण दर्ज करके ही उनकी कविता बनती है | भारतीय समाजव्यवस्था, लिंगभेद, पुरुषवादी सोच, इतिहास, स्मृतियाँ, लोकपक्ष, बाजारवाद के दुष्प्रभाव और मानवीय मूल्यों की आवश्यकता सब मिलकर ही उनकी कविता का परिदृश्य रचते हैं और उनके स्त्रीवाद को भी एक व्यापक फलक प्रदान करते हैं | अनामिका की कविता में स्त्री जीवन का हर पक्ष उपस्थित है – माँ, बेटी, लड़की, पत्नी, वृद्धा, वेश्या आदि और हर रूप – विद्रोहिणी, संघर्षशील, उदार, पतिव्रता भी ! 'कविता में औरत', 'खुरदुरी हथेलियाँ', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'दूब – धान', 'समय के शहर में', 'टोकरी में दिगंत' उनके प्रकाशित काव्य संग्रह हैं | यौन दासियाँ, धोबिन, नाइन, परित्यकताएँ, कामकाजी स्त्री, ग्रामीण और शहरी, घरेलू सभी इनकी कविताओं में आती हैं और मुक्त होती हैं बेहद में ! वर्तमान दौर में स्त्रियों को लेकर पुन: रीतिकालीन सोच – विचार और भावना बलवती जा रही है | वहीं छोटी – छोटी बच्चियाँ देह व्यापार मे धकेली जा रही हैं | अनामिका के यहाँ यह सच्चाई मन पर आघात करती हैं –

"अंकल, तुम बहुत भारी हो !
अच्छा, चॉकलेट खिला दो !
अंकल, तुम्हारे भी बेटी है ?
अच्छा बोलो, उसका क्या नाम ?"२

स्त्रियों के प्रति उदासीनता का समाज द्वारा बारंबार दोहराना, उसकी सत्ता को महत्व न देना और पुरुषवादी सोच पर आघात करती 'स्त्रियाँ' कविता स्त्री विमर्श के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई –

"पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज

बच्चों की फटी कॉपियों का
'चनाजोरगरम' के लिफ़ाफ़े बनने से पहले !
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घड़ी
अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद !"३

गौरतलब है कि यहाँ एक नहीं अनेक क्रियाएँ हैं – देखने की, सुनने की, पढ़ने की लेकिन एक भी क्रिया की कर्त्री स्त्री नहीं है | बहनापा अनामिका के स्त्री विमर्श का उल्लेखनीय बिंदु है जो उनकी अनेक कविताओं में वर्णित है | जोड़कर रखने की कला स्त्रियों को बचपन से ही घुट्टी में घोंट – घोंटकर पिलाई जाती है फलस्वरूप पति द्वारा दी जानेवाली यातनाएँ जी का जंजाल क्यों न बन जाएँ स्त्री तोड़ने या छोड़ने की बात जेहन में नहीं लाने पाती | सहना और हार मान लेना ही उसकी नियति बन जाती है –

"धीरे – धीरे मैं भी हो गई पालतू
बीमार से रगड़ा क्या, झगड़ा क्या,
मैंने साध ली क्षमा
मीठे लगते हैं खर्राटे भी इनके|"४

इनके अलावा 'आम्रपाली', 'बसरा की राबिया फकीर', 'तुलसी का झोला,' 'भामती की बेटियाँ' आदि कविताओं में अनामिका आम्रपाली, राबिया, रत्नावली और भामती आदि पौराणिक और एतिहासिक स्त्रियों को नई दृष्टि से देखती हैं | भारतीय समाज और संस्कृति से सारी सकारात्मक बातें बीन – फटकारकर अलग रख लेना और त्याज्य को तर्क की कसौटी पर तौलकर छोड़ देना अनामिका की विशेषता है |

स्त्री के दोयम दर्जे के प्रश्न को जनवादी और मानवाधिकार का प्रश्न माननेवाली कात्यायनी क्रांतिधर्मी और विद्रोहात्मक चेतना से लैस रचनाकार हैं | समझौतावादी प्रवृत्ति इनके यहाँ नहीं है और यही कारण है कि सत्तारूढ़ पितृसत्ता पर इनकी कविताएँ बड़ी बेबाकी से प्रहार करती हैं | स्त्री रचनाकारों को एक्टिविस्ट बनने को प्रेरित करती हुई वें कहती हैं, "मेरी यह पक्की धारणा है कि स्त्री – लेखन में स्त्री जीवन की वास्तविक सच्चाईयाँ और चुनौतियाँ तभी आ सकती हैं जब हम अपने सामाजिक सरोकारों के हिसाब से किसी न किसी रूप में 'एक्टिविस्ट' हों और साथ ही घर – गृहस्थी से लेकर सड़क-ऑफिस तक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और अपनी मान्यताओं के प्रति ईमानदार औरत के रूप में 'एसर्ट' करने का जोखिम उठाटे रहते हों और उसका खामियाजा भुगतते रहते हों|" ५

'सात भाईयों के बीच चंपा', 'राख अँधेरे की बारिश में', 'फुटपाथ पर कुर्सी, 'इस पौरुषपूर्ण समय में', 'जादू नहीं कविता' कात्यायनी के प्रकाशित काव्य संकलन हैं | 'हॉकी खेलती लड़कियाँ', 'सात भाईयों के बीच चंपा' जैसी कविताएँ इनकी ख्याति का आधार हैं | हॉकी खेलती लड़कियाँ बेखौफ हैं और अपना स्पेस खोजकर जी भी रही हैं ऊन क्षणों को लेकिन उन्हें पुन: घर भी जाना है वरना –

"देखने आए वर पक्ष के लोग
पैर पटकते चले जाएँगे
बाबूजी घुस आएंगे गरजते हुए मैदान में
भाई दौड़ता हुआ आएगा
और झोंटा पकड़कर
घसीटकर ले जाएगा |" ६

स्त्री से सदैव यही अपेक्षा की जाती है कि उन्हें कहीं से उखाड़कर कहीं फेंक दो वें फिर उग आएँगी | चाहे तोड़ो – मरोड़ो, मसलों, काटो - पीटो लेकिन स्त्री जिंदा रहेगी | परिस्थितियाँ कितनी ही जटिल और दुरूह हो जाए, स्त्री लोहा लेकर रहेगी | यही स्त्री का संघर्ष है उसकी जीवटता है –

"ओखल में धान के साथ
कूट दी गई
भूसी के साथ कूड़े पर
फेंक दी गई
वहाँ अमरबेल बनकर उगी |"७

कात्यायनी धार्मिक ग्रंथों में वर्णित उस संकुचित सोच पर भी प्रहार करती हैं जिसने स्त्री को कभी बराबरी का दर्जा नहीं दिया अपितु दात्री रूप में ही अधिक भुनाया | कात्यायनी दया की भीख माँगने में विश्वास नहीं रखती अपितु वें तो चाहती हैं आजीवन संघर्ष ! अन्याय और शोषण को सहते रहना भी अन्याय में समर्थन देना है | इसलिए वें बारूदी सुरंगें बिछाकर चुप्पी की दुनिया को उड़ा देना चाहती हैं | समकालीन स्त्री रचनाकारों में कात्यायनी एकमात्र क्रांतिकारी और जनवादी चेतना तथा विद्रोह और प्रतिरोध की कवयित्री हैं |

समकालीन स्त्री विमर्श में दलित स्त्री की स्थिति और मुक्ति की राहों को तलाशती सुशीला टाकभौरे का नाम आदर के साथ लिया जाता है | पहला स्त्री और दूसरा दलित होने की दोहरी पीड़ा इनकी कविता में सहज ही देखी जा सकती है | स्त्री और दलित चेतना दोनों मिलकर पुरुषसत्ता को उसके किए का आईना दिखाते हुए वें लिखती हैं

"सदियाँ बीत गईं
तुमने मनुष्य नहीं बनने दिया हमें
पीड़ाएँ फसलों के साथ
उगती चली आईं
ओ शबरी के राम
तुम्हीं ने सीता को
धरती में समा जाने को मजबूर कर दिया था |"८

'औरत नहीं मजबूर', 'वह मर्द की तरह जी सकेगी', 'आज की खुद्दार औरत', 'चलो तुम्हें मेला दिखाएँ' सरीखी कविताएँ स्त्री की नियति को परिभाषित करते हुए उसकी मुक्ति की कामना भी करती है | प्रसंगानुसार इनकी कविता का टोन उग्र और नर्म बंता रहता है | 'यह तुम भी जानो' और 'तुमने उसे कब पहचाना' आदि कविता संग्रह में स्त्री की सशक्त उपस्थिति है | सुशीला चाहती हैं स्त्री की मुक्ति फिर वह दलित हो या सवर्ण ! स्त्री तो स्त्री है चाहे किसी जाति की हो या तबके की | उसकी स्थिति हर जगह एक सी है | दलित स्त्री की पीड़ा समस्त स्त्री जाति की पीड़ा है –

"एक स्त्री
जब कोई कोशिश करती है
लिखने, बोलने, समझने की
सदा भयभीत सी रहती है
मानो पहरेदारी करता हुआ
कोई सिर पर सवार हो |"९

समकालीन स्त्री रचनाकारों में आदिवासी स्त्रियों के जीवन का सच, उसकी अस्मिता और इस भूमंडलीकरण के युग में जल, जंगल और जमीन से जुड़े तमाम प्रश्नों को रेखांकित कर स्त्री मुक्ति की राह तलाशती निर्मला पुत्तुल ने काव्य के क्षेत्र में पदार्पण किया अपने प्रथम काव्य संग्रह 'बेघर सपने' से | और फिर क्रमश: 'नगाड़े की तरह बजते शब्द', 'अपने घर की तलाश में' आदि काव्य संग्रहों तक इनकी कविता का ग्राफ भी और समृद्ध होता गया है |

नारी उत्पीड़न, शोषण, अशिक्षा जैसे मुद्दों को लेकर उन्होंने सशक्त रचनाएँ लिखी हैं | स्त्री की स्थिति पर दिए साक्षात्कार में वें कहती हैं "देखिए चाहे वे मुख्यधारा की स्त्रियाँ हों या हाशिए की | स्त्रियाँ तो स्त्रियाँ हैं ! चाहे वें आदिवासी समाज की स्त्री हो या अन्य समाज की | फर्क तो इतना ही है कि आदिवासी समाज की स्त्री सड़क पर पिटी जाती है और मुख्यधारा की स्त्री बेडरूम में या घर में | प्रताड़ित दोनों होती हैं केवल भीतर – बाहर का अंतर है |" १०

बाबा से दूर न ब्याहने की बिनती करती निर्मला पुत्तुल अपनी जमीन से भी जुड़ी रहना चाहती हैं | प्रकृति और निश्छल जीवन और शहरी जीवन की चकाचौंध का कटु यथार्थ इनकी कविता में चित्रित है| 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता में एक बेटी की करूण, आर्त विनती है और अपनी जमीन से जुड़े रहने की आस भी –

"जंगल, नदी, पहाड़ नहीं हो जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन
वहाँ तो कतई नहीं
जहाँ की सड़कों पर
मान से भी ज्यादा तेज दौड़ती हों, मोटर गाड़ियाँ |" ११

घर में सभी के लिए जगह है लेकिन स्त्री के लिए नहीं | उसकी पहचान और जगह के लिए वह आज भी छटपटा रही है | इसकी अभिव्यक्ति निर्मला जी की कविताओं में मिलती है | बाजारवाद के इस समय में स्त्रियाँ भी मात्र वस्तु होकर रह गई हैं | टेबलों पर सेक्स बेचा जा रहा है | इस दुनिया में स्त्री की स्थिति और बदतर होती जा रही है | इन सभी स्थितियों और प्रश्नों को निर्मला जी ने अपनी कविता का विषय बनाया है | वें स्वयं को देख – टटोलकर मुक्त होना चाहती हैं अपनी जाति से | असल दुनिया में तो वह संघर्षशील है ही | अपनी पहचान प्राप्त करने और खोए अधिकारों को पाने के लिए केवल कल्पना और स्वप्नलोक ही बचता है जहाँ वह मुक्त है फिर भी मुक्ति का स्वपन, स्वप्न ही है –

"हर बेचैन स्त्री तलाशती है
घर, प्रेम और जाति से अलग
अपनी एक ऐसी जमीन
जो सिर्फ उसकी अपनी हो
एक उन्मुक्त आकाश
जो शब्द से परे हो |" १२

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि समकालीन स्त्री रचनाकारों की कविताओं में स्त्री अपनी अस्मिता और मुक्ति की राहें तलाश रही हैं, वें संघर्षशील हैं | अनामिका उदारवादी विचारधारा से, वहीं कात्यायनी विद्रोहात्मक और क्रांतिकारी चेतना से लैस हैं | निर्मला पुत्तुल आदिवासी स्त्रियों वहीं सुशीला जी दलित समाज में स्त्री की मुक्ति रास्ते टटोल रही हैं | सभी का परिवेश, विचारधाराएँ भिन्न हैं किंतु लक्ष्य एक – स्त्री मुक्ति!

संदर्भ सूत्र :

1. डॉ. सुमित पी. वी, अनामिका के साहित्य में स्त्री विमर्श, पृ. १६५
2. अनामिका, चौदह बरस की कुछ सेक्स वर्कर्स, दूब-धान, पृ. ५६
3. अनामिका, स्त्रियाँ, खुरदुरी हथेलियाँ, पृ. १३-१४
4. अनामिका, पतिव्रता, कविता में औरत, पृ. ६०
5. कात्यायनी, कुछ जीवंत, कुछ ज्वलंत, पृ. १४३
6. कात्यायनी, हॉकी खेलती लड़कियाँ, सात भाईयों के बीच चंपा, पृ. २०
7. कात्यायनी, सात भाईयों बीच चंपा, सात भाईयों के बीच चंपा, पृ. २१-२२
8. सुशीला टाकभौरे, पीड़ा की फसलें, यह तुम भी जानो, पृ ६५
9. सुशीला टाकभौरे, स्त्री, यह तुम भी जानो, पृ. ३१
10. समालोचन, अरुण देव, २०१७ अक्टूबर
11. निर्मला पुत्तुल, उतनी दूर मत ब्याहना बाबा, नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ. ५२
12. वही, वही, पृ. ७२-